रानियां (हरियाणा)। मुख्यमंत्री भुपेन्द्र सिंह हुड्डा को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए ब्र.कु.कमलेश।

पाथरी। 'अमृत महोत्सव' पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए चीनी मिल के पाटील साहेब, ब्र.कु.उषा, ब्र.कु.नलिनी, ब्र.कु.करूणा तथा अन्य।

पुणे। नविनिर्वाचित नगरसेवक धनंजय जाधव को 'आत्म-स्मृति' का तिलक देते हुए ब्र.कु.लता साथ में हैं ब्र.कु.वंदना।

पहाड़ी जुरहरा। सेवाकेंद्र पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कामा पीठाधीश्वर के स्वामी हरि चैतन्य पुरी महाराज साथ में हैं सरपंच जुरहरा, ब्र.कु.कविता तथा अन्य।

सासाराम। दीप प्रज्ज्वलित करते हुए विधायक राजेश्वर राज, विधायक रामधनी सिंह, विधायक जवाहर प्रसाद, जिला पार्षद प्रमिला सिंह,क्षेत्रिय संचालिका ब्र.कु.रानी, ब्र.कु.केसर तथा अन्य।

सोनगढ़। थर्मल पावर स्टेशन के अधिकारियों को 'तनावमुक्त जीवन' पर प्रशिक्षण देने के पश्चात् ग्रुप फोटो में हैं मुख्य अभियंता, ब्र.कु.स्वामीनाथन, ब्र.कु.पिंकी तथा अन्य अधिकारीगण।

भगवान के दिव्य स्वरूप का वर्णन

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

इस तरह भगवान ने इक्कीस श्रेणी का वर्णन करते हुए उसकी सर्वोच्च शक्ति की, असीम ऐश्वर्य की महिमा बतायी और कहा मेरी दिव्य विभूति का अंत नही है, कितना भी वर्णन करता जाऊं तो भी असीम है। सारा ऐश्वर्य, सौन्दर्य तथा तेजस्वी सृष्टियां, वह सिर्फ मेरे स्वरूप का एक अंश है। संसार में जो कुछ भी आप देखते हो, मेरी तुलना में कुछ भी नहीं है। ये भगवान ने स्पष्ट कर दिया। इसका अर्थ यह नहीं कि परमात्मा कण-कण में व्यापक है, नहीं। भावार्थ समझो! भगवान स्थूल धरातल पर बात नहीं करते हैं। इस तरह से अपने असीम ऐश्वर्य की महिमा का वर्णन सुनाया कि इस दुनिया में वह असीम ऐश्वर्य, सौन्दर्य, तेज आपको कुछ भी देखने नहीं मिलेगा जो परमात्मा का दिव्य स्वरूप है।

इस तरह से ग्यारहवें अध्याय में भगवान विश्व रूप का दर्शन कराते हैं। भगवान अर्जुन को दिव्य दृष्टि प्रदान करते हैं और विश्व रूप में अपना असीम स्वरूप प्रकट करते हैं। पहले श्लोक से लेकर 8 वें श्लोक तक विश्व रूप दर्शन के लिए अर्जुन द्वारा निवेदन के बाद दिव्य चक्षु की का वर्णन किया गया है। 9 वें श्लोक से 22 वें श्लोक तक विश्व स्वरूप का विवरण और महिमा बतायी गई है। 23 वें श्लोक से लेकर 25 वें श्लोक तक अर्जुन की व्याकुल मनोदशा का वर्णन किया गया है। 26 वें श्लोक से 34 वें श्लोक तक महाकाल का स्वरूप और निमित्त भाव के साथ युद्ध करने की प्रेरणा दी गई है। 35 वें श्लोक से लेकर 45 वें श्लोक तक अर्जुन का सर्मपण भाव और क्षमा याचना का वर्णन किया गया है। 46 वें श्लोक से 55 वें श्लोक तक अनन्य भाव के बिना प्राप्ति नहीं हो सकती है। इस बात को स्पष्ट किया गया है।

फिर अर्जुन ने कहा कि आपने जो परम गोपनीय आध्यात्मिक ज्ञान सुनाया। उससे मेरा अज्ञान और मोह नष्ट हो गया है। इसलिए यदि मानते हो कि मेरे द्वारा आपका वह रूप देखा जाना संभव है तो हे योगेश्वर, आप अपने अविनाशी स्वरूप का दर्शन कराइए। भावार्थ यह है कि हमें इस बात का स्मरण कराता है कि किस प्रकार भगवान अपने भक्तों के हृदय में स्थित उनके अज्ञान अंधकार को नष्ट कर देते हैं और उन्हें दिव्य चक्षु प्रदान कर समर्थ बनाते हैं। अर्थात् सूक्ष्म विषय को ग्रहण करने की बौद्धिक क्षमता प्रदान करते हैं। जितना व्यक्ति का अनन्य भाव होता है। उतना परमात्मा द्वारा वह दिव्य चक्षु प्राप्त करते हैं, जिससे सूक्ष्म विषयों को ग्रहण करने की बौद्धिक क्षमता मिलती है।

इस तरह से अब संजय बताता है कि अर्जुन ने क्या देखा। क्योंकि दिव्य चक्षु का वरदान संजय को भी प्राप्त था। उसने उस दिव्य स्वरूप का वर्णन किया कि आकाश में एक साथ हजारों सूर्य उदय होने से जितना प्रकाश होता है वो उस परमात्मा के प्रकाश के सदृश है। इतना असीम प्रकाश था और आश्चर्यचकित हर्षित रोमों वाला धनंजय परमात्मा को सिर झुकाकर हाथ जोड़कर के प्रणाम करता है। ये दिव्य स्वरूप जो कहा सभी प्रकाशों में तेजस्वी सूर्य के समान है, लेकिन वो तेज चुभने वाला नहीं, नक्षत्रों में चंद्रमा के समान शीतल है। इस प्रकार से भगवान ने अपने इक्कीस श्रेणी के सौंदर्य का वर्णन किया। जिसमें सर्वोच्च स्थिति को प्रकट किया वो स्वरूप संजय भी अपनी दृष्टि से देखते हुए और ये देखता है कि कैसे अर्जुन झुक जाता है और प्रणाम करता है उस दिव्य स्वरूप को। उसके बाद वह दूसरा स्वरूप देखता है। उसके बाद कमल आसन पर ब्रह्मा जी एवं शंकर को देख रहे हैं। अब ये विराट रूप किसका है? परमात्मा का नहीं है। ये श्रीकृष्ण का है। जिस तन में उन्होंने अवतरण किया था वा जिस तन को माध्यम बनाया था, ये गीता का ज्ञान सुनाने के लिए, उसके भी स्वरूप का दर्शन कराता है कि परमात्मा कौन और ये कौन (श्रीकृष्ण) हैं।

सारे देवतायें, कमल आसन पर ब्रह्मा जी एवं शंकर को देख रहे हैं। परमात्मा आदि, मध्य, अंत रहित अनंत सामर्थ्य से युक्त हैं, जबकि श्रीकृष्ण ने इस संसार में समय प्रति समय विभिन्न स्वरूप से जन्म लिया है। सृष्टि के आदि-मध्य-अंत में समय प्रति समय उसने अनंत सामर्थ्य युक्त स्वरूप में जन्म लिया है। शंख, चक्र, गदा, पद्मयुक्त, प्रकाशमान तेज पुंज स्वरूप का वो अपनी बुद्धि से ग्रहण नहीं कर पा रहा है। परमात्मा इस जगत के परम आश्रय, शाश्वत् धर्म के रक्षक हैं। जबकि श्रीकृष्ण समय प्रति समय इस संसार में विभिन्न कार्य अर्थ जन्म लेता है, लेकिन वो परमात्मा नहीं है। इसलिये परमात्मा के दिव्य स्वरूप का साक्षात्कार पहले कराया कि वो असीम स्वरूप कौन सा है। भगवान को कहते ही हैं करनकरावनहार। वो किसके द्वारा कार्य कराता है? वो ब्रह्मा, विष्णु और महेश के द्वारा यह कार्य कराते हैं, जो कि आदि, मध्य, अंत तीनों समय में अपने अनंत सामर्थ्य से युक्त होते हैं। भगवान अर्थात् उसी का नाम है परमात्मा जो ये तीनों को भी इतना सामर्थ्य प्रदान करते हैं। सामर्थ्य प्रदान करते हुए वे संसार में अपने स्वरूप को, विशेष रूप से रचकर के, इस संसार में शाश्वत् धर्म की रक्षा करने हेतु, ऐसे दिव्य स्वरूप में आते हैं। लेकिन मनुष्य उन्हें पहचान नहीं पाता है। (क्रमशः)

समय की पुकार- 'परमात्मा शक्ति से स्वर्णिम संसार

- प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय 2012-2013 को 'समय की पुकार- परमात्मा शक्ति से स्वर्णिम संसार' के रूप में मनायेगा। इस थीम के अंतर्गत समय की मांग, परमात्मा की शक्ति द्वारा स्वर्णिम संसार के विषय पर देश तथा विदेश में अनेकों कार्यक्रमों का आयोजन किया जायेगा।

शिक्षा प्रभाग

ब्रह्माकुमारीज शिक्षा प्रभाग द्वारा 'एजुकेशन इन वैल्यु एण्ड स्प्रिच्युआलिटी' विषय पर 1 जून से 5 जून 2012 तक ज्ञानसरोवर परिसर में युनिवर्सिटी एवं कालेज के शिक्षकों के लिए काफ्रेन्स का आयोजन किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ब्र.कु.मृत्युंजय, उपाध्यक्ष, शिक्षा प्रभाग, इ्पदहा : 02974 - 238195/238260/235020,
Email : educationwinghq@gmail.com

परमात्मा के भगीरथ

.....पृष्ठ 1 का शेष

देकर और विशेष रूप से आमंत्रित अतिथियों के द्वारा गंगा मईया की आरती करायी जाती थी। मेले के साथ राजयोग शिविर का कैंप भी लगाया गया इस आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन के अवसर पर स्थानीय विधायक ए.के.जमखंडारिया, विधायक जयेश भाई तथा वंदन मकवाना, डी.एस.पी. सयैद शाह, प्रख्यात उद्योगपति करजी भाई दंडुक सहित शहर के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

महिला प्रभाग

ब्रह्माकुमारीज महिला प्रभाग द्वारा 'वीमेन द सेविअर ऑफ कल्चर' विषय पर 8 जून से 12 जून 2012 तक ज्ञानसरोवर परिसर में राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया है। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - ब्र.कु.सविता, मुख्यालय संयोजक, इ्पदहा : 02974 -238101,09414155345,
E - m a i l : savitabehn@gmail.com

धार्मिक प्रभाग

धार्मिक प्रभाग का कॉन्फ्रेंस 17 अगस्त से 22 अगस्त 2012 को ज्ञानसरोवर में रखा गया है। जिसमें धार्मिक संस्थाओं के अध्यक्ष राष्ट्रीय व राज्य स्तर के महामंत्री तथा संत भाग लेंगे। अधिक जानकारी के लिए ब्र.कु.रामनाथ से सम्पर्क करें। मोबाईल - 0414150854